याकूब की पत्री

अध्याय
एक

याकूब की पत्री का परिचय

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES
Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2015 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., 316 लाईव ओक रोड़., कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1973, 1978, 1984, 2011 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। जानडरवॉन बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 192 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. पृष्ठभूमि 1

क. लेखक 1

1. पारम्परिक दृष्टिकोण 2

2. व्यक्तिगत् इतिहास 4

ख. मूल पाठक 5

ग. अवसर 6

1. स्थान 6

2. तिथि 6

3. उद्देश्य 8

III. सरंचना एवम् विषयवस्तु सूची 9

क. अभिवादन 12

ख. ज्ञान और आनन्द 12

ग. ज्ञान और आज्ञाकारिता 14

1. कर्म 14

2. पक्षपात 15

3. विश्वास 16

घ. ज्ञान और शान्ति 17

1. जीभ 17

2. दो प्रकार का ज्ञान 18

3. आन्तरिक संघर्ष 19

ङ. ज्ञान और भविष्य 19

1. योजनाओं को निर्मित करना 19

2. धन का अपसंचय 20

3. धैर्य सहित प्रतीक्षा करना 20

च. ज्ञान और प्रार्थना 21

छ. अन्तिम उपदेश 21

IV. सारांश 22

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

याकूब की पत्री

अध्याय एक

याकूब की पत्री का परिचय

परिचय

एक क्षण के लिए, आप अपने निकट सम्बन्धी या मित्र के साथ पल बढ़ कर बड़े होने के विषय की कल्पना करें। आप इकट्ठे खेलते, इक्ट्ठे सीखते और अपने वयस्क होने तक इक्ट्ठे पहुँचे हैं। आपके जीवन कठे अधिकांश हिस्से में, यह व्यक्ति आपके जैसा ही रहा है और तब एक दिन आपका यह सम्बन्धी या मित्र परमेश्वर का "चुना हुआ" होने का दावा करता है। ठीक है, यीशु के भाई, याकूब के लिए, **यह** दृश्य एक काल्पनिक दृश्य नहीं था। अपनी छोटी आयु के वर्षों में, उसने सन्देह किया था यीशु ही उद्धारकर्ता था। परन्तु उसके जीवन के उत्तरोत्तर काल में, वह न केवल यीशु का अनुयायी बन गया; अपितु यरूशलेम की कलीसिया का अगुवा बन गया और नए नियम की एक पुस्तक लिखी जो उसके नाम पर है।

यह *याकूब की पत्री* के ऊपर हमारी श्रृंखला का पहला अध्याय है जिसका *शीर्षक* हमने "याकूब की पत्री का परिचय" के नाम से दिया है। इस अध्याय में, हम कुछ ऐसे परिचयात्मक विषयों को स्पर्श करेंगे जो हमें नए नियम के इस भाग की व्याख्या को विश्वासयोग्यता के साथ आगे बढ़ाने में सक्षम करेंगे।

हम "याकूब की पत्री के परिचय" के प्रति हमारे दृष्टिकोण को दो तरीकों से लेंगे। प्रथम, हम इस पुस्तक की पृष्ठभूमि का पता लगाएँगे। और दूसरा, हम इसकी सरंचना और विषयवस्तु सूची की जाँच करेंगे। आइए याकूब की पत्री की पुस्तक की पृष्ठभूमि से आरम्भ करें।

पृष्ठभूमि

बाइबल आधारित किसी भी पुस्तक के साथ, यह महत्वपूर्ण है कि जितना अधिक संभव हो इसके लेखनकाल के चारों तरफ के संदर्भ को समझ लिया जाए। बाइबल की विभिन्न पुस्तकें लोगों के द्वारा विशेष उद्देश्यों और सरोकारों को लेकर वास्तविक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में लिखी गई थी। परिणामस्वरूप, इस तरह की पृष्ठभूमियों का अध्ययन करना स्वयं पुस्तकों को समझने में हमारी सहायता कर सकता है। जब हम याकूब की पत्री की पुस्तक के साथ सम्बद्ध उद्देश्यों और पृष्ठभूमियों के ऊपर ध्यान लगाते हैं, तो हम यह समझने के लिए अधिक उत्तम तरीके से सुसज्जित हो जाएँगे कि इस पत्री का क्या अर्थ है जब इसे पहली बार लिखा गया था। और हम याकूब के शब्दों को हमारे आज के जीवनों में अधिक प्रभावशाली तरीके से लागू कर सकते हैं।

याकूब की पत्री की पृष्ठभूमि के समझने के लिए, हम सर्वप्रथम पुस्तक के लेखक के ऊपर ध्यान देंगे। इसके पश्चात इसके मूल पाठकों को देखेंगे। और अन्त में, हम उस अवसर की जाँच करेंगे जिसमें याकूब की पत्री लिखी गई थी। आइए याकूब की पत्री के लेखक से आरम्भ करें ।

लेखक

यद्यपि हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र, बाइबल की बहुत सी पुस्तकों, जैसे याकूब को प्रेरित किया, साथ ही इनके मानवीय लेखकों को परिचित कराता है। और जितना अधिक हम बाइबल की पुस्तकों के लेखकों के बारे में जानते हैं, उतना अधिक उत्तम रीति से हम समझने के लिए और जो कुछ

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उन्होंने लिखा उसकी व्याख्या करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसलिए, इसी कारण से, हमें उन सब बातों को सीखना चाहिए कि किसने याकूब की पत्री को लिखा था।

याकूब की पत्री के लेखक की जाँच करने के लिए, हम दो विषयों के ऊपर ध्यान देंगे। सर्वप्रथम, हम याकूब की पत्री के पारम्परिक दृष्टिकोण का पता लगाएँगें, जो कि यीशु क०ा छोटा भाई था, जिसने इस पत्री को लिखा था। दूसरा, हम लेखक के व्यक्तिगत् इतिहास के बारे में खोज करेंगे। आइए इन विषयों के पारम्परिक दृष्टिकोण को देखते हुए आरम्भ करें।

पारम्परिक दृष्टिकोण

याकूब 1:1 में, पत्री, निम्न साधारण से कथन के साथ खुलती है:

परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के दास याकूब की ओर से उन बारहों गोत्रों को जो तितर-बितर होकर रहते हैं नमस्कार पहुंचे (याकूब 1:1)।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, यह पत्र स्पष्ट रूप से "याकूब" नाम के एक व्यक्ति को अपना लेखक होने से परिचित कराता है। परन्तु यह अभिवादन ठीक रीति से यह सुनिश्चित नहीं कर देत०ा है कि यह व्यक्ति कौन था। नए नियम में इस नाम से पाँच भिन्न पुरूष पाए जाते हैं, जिसमें यीशु के दो शिष्य भी सम्मिलित हैं, जिनका नाम याकूब था। परन्तु इन पाँच पुरूषों में से केवल दो के पास ही आरम्भ की कलीसिया को इस तरह का पत्र लिखने का अधिकार प्राप्त था।

इन दो में से पहला, जबदी का पुत्र और यूहन्ना का भाई याकूब था। परन्तु प्रेरितों के काम 12:2 के अनुसार, यह याकूब हेरोदेस अग्रिप्पा - I के अधीन लगभग 44 ईस्वी सन् में शहीद हो गया था। जैसा कि हम बाद में देखेंगे, याकूब की पत्री का हेरोदेस की मृत्यु उपरान्त लिखे जाने की मान्यता में कई अच्छे कारण पाए जाते हैं। इसलिए, यह संभावना अधिक है कि, जबदी का पुत्र, याकूब इस पत्र का लेखक था। दूसरे याकूब का यीशु के छोटा भाई होने की संभावना पाई जाती है। वह साथ ही यरूशलेम की आरम्भिक कलीसिया का अगुवा भी था। अभी तक, यह याकूब इन दोनों में से ज्यादा प्रमुख था और वही था जिसके लिए अधिकांश धर्मवैज्ञानिकों ने सदियों से इस पत्री को इसके नाम पर नामित किया है।

यीशु के भाई याकूब ने इस पत्री को लिखा, को लेकर पारम्परिक दृष्टिकोण के समर्थन में बहुत अधिक प्राप्त है। परन्तु इसी के साथ कुछ आपत्तियाँ भी पाई जाती हैं। आइए इस दृष्टिकोण के समर्थन के साथ आरम्भ करें।

समर्थन– पहले स्थान पर, 1:1 में, लेखक ने इतना कहने कि "परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के दास" से ज्यादा कुछ अधिक दस्तावेज को प्रस्तुत नहीं किया है। उसने सामान्य रूप से यह मान लिया है कि केवल उसके नाम से ही उसे पहचान लिया जाएगा और यही केवल पर्याप्त अधिकार को अपने में रखता है। और इस अधिकार के ऊपर आधारित हो, उसका पत्र एक के बाद दूसरे आदेश को अपने में रखे हुए है। यह आरम्भिक अभिवादन, तब, यीशु के भाई याकूब के होने के बारे में बड़ी शक्ति से स्वयं को, यरूशलेम की आरम्भिक कलीसिया में अपने पद के कारण प्रस्तुत करता है।

ठीक है, प्रेरितों की कलीसिया के दिनों में, अधिकार का पूरा प्रश्न ही अत्यन्त महत्वपूर्ण था। यीशु मसीह के अनुयायियों के इस नए समाज की अगुवाई करने और शिक्षा देने का अधिकार किसके पास था? वहाँ उस समय कई तरह के लेख प्रचलन में थे जो कि अधिकार के प्रति विभिन्न के दावों को प्रस्तुत कर रहे थे, और उनमें से एक शर्त जो उभर कर सामने आई वह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

बहुत ही महत्वपूर्ण थी कि एक व्यक्ति के द्वारा यीशु की सेवकाई का प्रत्यक्ष गवाह होना था, जिसने स्वयं प्रभु के साथ अपने समय को व्यतीत किया हो को न्यायसंगत दावा होने के रूप में माना जाता था कि उसे आरम्भिक कलीसिया में शिक्षा देने का अधिकार प्राप्त था। अब, याकूब,यीशु का भाई, इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि अपने पूरे जीवन में वास्तविक प्रत्यक्ष दर्शी था, और इसने उस बात की महत्वपूर्णता में विशेष भूमिका अदा की और इस बात की महत्वपूर्णता में कि याकूब की पत्री आरम्भिक कलीसिया में उसी के द्वारा दी गई थी। - रेव्ह. डॉ. माईकल वॉलकर

दूसरे स्थान पर, आरम्भिक कलीसिया की गवाही इस पुस्तक के लेखक के दृष्टिकोण के होने की पुष्टि करती है। *क्लेमेंट की प्रथम पत्री,* लगभग 96 ईस्वी सन् में लिखी गई थी, और *हेंमास के चरवाहे,* लगभग 140 ईस्वी सन् में आसपास लिखा गया था, दोनो या तो याकूब की पत्री को उदधृत करता हैं या फिर इसकी ओर संकेत देते हैं। और औरगन, जो 254 ईस्वी सन् में मरा, ने याकूब की पत्री की पुस्तक को कई बार *रोमियों के पत्री के ऊपर अपनी टीका* में उपयोग किया है। औरगन का याकूब के उपयोग करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण था क्योंकि पुस्तक 4 के, अध्याय 8 में, औरगन याकूब के लेखक को "प्रभु का भाई" होने से परिचित करता है। हम यह भी जानते हैं कि पूर्व की कलीसिया में, और कालान्तर में पश्चिमी की कलीसिया में, इस पत्र को यीशु के भाई के द्वारा ही लिखे जाने के रूप में स्वीकार किया गया है।

अब, पारम्परिक दृष्टिकोण के लिए इतना अधिक समर्थन होने के पश्चात् कि यीशु का भाई याकूब ही इसका लेखक था, कुछ आपत्तियाँ भी दी गई हैं।

आपत्तियाँ– आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने कम से कम दो विकल्पों का सुझाव दिया है। कुछ व्याख्याकारों ने आरम्भिक कलीसिया में एक अज्ञात् याकूब की ओर देखा है। उन्होंने देखा कि जिस व्यक्ति ने यह पत्री लिखी है वह सचमुच में याकूब ही था, परन्तु वह यीशु का भाई या जबदी का पुत्र नहीं था। वह अज्ञात् बना रहता है क्योंकि इसका उल्लेख शिशुकालीन कलीसिया के किसी भी अन्य लेख में नहीं मिलता है। परन्तु फिर भी, इस विचार की संभावना नहीं है। जैसा कि हमने पहले से ही ध्यान दिया है, कि लेखक की पहचान पत्री के आरम्भ में ही सादगी भरे तरीके से होती है कि वह बहुत अच्छी तरह से जाना पहचाना चेहरा था। यह अत्यन्त सन्देहजनक है कि उसके बारे में कहीं कुछ भी न लिखा गया हो।

दूसरा विचार आलोचनात्मक व्याख्याकारों के द्वारा दिया गया है कि नकली लेखकों के विषय मे है। नकली लेखक उस अभ्यास की ओर संकेत करता है जिसमें लिखा हुआ लेखनकार्य वास्तविक लेखक को छोड़कर किसी भी अन्य लेखक के नाम पर कर दिया जाता था। यह अभ्यास कई विभिन्न कारणों से पहली सदी के यहूददियों के मध्य में प्रचलित हो गया था। नकली लेखक के होने का एक मुख्य कारण लिखी हुई एक पुस्तक या पत्री में अधिकार लाना या उसे महत्वपूर्ण बनाने से था। याकूब की पत्री की घटना में, आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने यह तर्क दिया है कि याकूब को छोड़कर किसी ने कलीसिया में अपने पत्रियों को व्यापक स्वीकृति मिलने के लिए उसके नाम का उपयोग किया है। अब, जैसे कि 2 थिस्सलुनीकियों 2:2 जैसे संदर्भों के अनुसार, इस अभ्यास को पहली सदी में एक धोखे के रूप में अपमानित किया गया है। परन्तु आलोचनात्मक विद्वान अब भी इस आपत्ति के लिए कम से कम तीन तर्कों को प्रस्तुत करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

सबसे पहले, वे कहते हैं, यीशु के साथ लेखक के किसी भी सम्बन्ध का उल्लेख नहीं किया गया है। वे कहते हैं कि यह सोचना अलकल्पनीय है कि यीशु का भाई कलीसियाओं को एक पत्री लिखे और अपने पारिवारिक सम्बन्ध को प्रगट न करे जब वह अपनी स्वयं की पहचान करा रहा हो। परन्तु यहूदा, जो कि यहूदा की पत्री का लेखक है, भी यीशु का भाई था। और वह अपने पत्र में यीशु के साथ उसके लहू के रिश्ते का उल्लेख नहीं करता है। इस कारण, नकली लेखक होने का यह तर्क अपने आप में ही बड़े अच्छे तरीके से कमजोर है।

दूसरा, कुछ आलोचनात्मक विद्वान नकली लेखक के होने की धारणा को इसलिए मानते हैं क्योंकि पुस्तक ऐसे प्रमाण देती है कि लेखक यूनानी विचारधारा – या यूनानी– संस्कृति से अवगत था, और याकूब, पलश्तीन का रहने वाला एक यहूदी था। यह सत्य है कि याकूब की पत्री के लेखक को यूनानी संस्कृति के प्रति कुछ जागरूकता थी। उदाहरण के लिए, याकूब 3:6 में, उसने "एक व्यक्ति की जीवन-गति" जैसे वाक्य का उपयोग किया है। यह वाक्य सामान्य रूप से यूनानी दर्शनशास्त्र और धर्म में उपयोग होता था। परन्तु याकूब की पत्री के लिखे जाने के समय पर, पलश्तीन के बहुत से अच्छी तरह से शिक्षित यहूदियों के पास यूनानी दर्शनशास्त्र और धर्म के नाम मात्र के ज्ञान से अधिक ज्ञान था।

इसके अतिरिक्त, जबकि नए नियम के अन्य भागों में पाई जाने वाली यूनानी की अपेक्षा याकूब की पत्री की यूनानी भाषा अधिक जटिल है। सच्चाई तो यह है, कि इस पत्री की लेखनशैली उस समय की अन्य पुस्तकों जैसे *बारह कुलपतियों के नियम* और अन्य यूनानी विचारधारा प्रेरित यहूदी लेखनकार्यों के जैसा ही है।

नकली लेखक के होने की तीसरा तर्क प्रेरितों के काम और गलातियों की तुलना में याकूब की पत्री में मिलने वाली धर्मवैज्ञानिक चित्रण की विसंगतियों की ओर संकेत है। यह दृष्टिकोण सुझाव देता है कि याकूब की पत्री में व्यक्त किए गए कुछ विचार नए नियम की अन्य पुस्तकों में याकूब की पत्री को संकेतिक किए हुए कुछ धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के साथ नहीं मिलते हैं। उदाहरण के लिए, आलोचनात्मक व्याख्याकार प्रेरितों का काम 21:17-25 और गलातियों 2:12 जैसे संदर्भों की ओर संकेत देते हैं। वे तर्क देते हैं, कि इन वचनों में, याकूब व्यवस्था के ऊपर रूढ़िवादी यहूदी-मसीही विश्वासी दृष्टिकोण के लिए एक प्रवक्ता प्रगट होता हुआ दिखाई देता है। परन्तु याकूब 1:25 और याकूब 2:12 व्यवस्था के प्रति कुछ सीमा तक उदार दृष्टिकोण को प्रगट करते हुए, इसे ऐसी "स्वतंत्रता देने वाली व्यवस्था" कह कर पुकारते हैं।

परन्तु ये भिन्नताएँ साधारण रूप से इतना ज्यादा बड़ी नहीं हैं जैसा कि आलोचनात्मक विद्वान इन्हें बना देते हैं। निकट समीक्षा करने पर, प्रेरितों का काम और गलातियों में उदधृत किए गए वचन एक चरम यहूदी-मसीही विश्वासी दृष्टिकोण को प्रस्तुत नहीं करते हैं। और याकूब की प्रेरितों के काम और गलातियों में दी हुई व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण, वास्तव में, याकूब की पत्री में दिए हुए धर्मविज्ञान के साथ सुसगंता में है।

जैसा कि हम देखते हैं, याकूब, यीशु के भाई के विरोध में दी हुई तर्क, इस पुस्तक का लेखक है, अपने सर्वोत्तम रूप में कमजोर है। याकूब के लेखक होने के प्रति दिया हुआ तर्क ज्यादा निरूत्तर करने वाला है। और इसी कारण से, अधिकांश इवैन्जेलिकल अर्थात् सुसमाचारवादी विद्वान सही पुष्टि करते हैं, कि याकूब, यीशु का भाई, इस पत्री का लेखक है जिसमें उसका नाम लिखा हुआ है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

हमने याकूब की पत्री के लेखक होने के ऊपर इसे पारम्परिक दृष्टिकोण को देखते हुए ध्यान दिया है। अब, आइए याकूब के व्यक्तिगत् इतिहास को और भी अधिक निकटता से देखें।

व्यक्तिगत् इतिहास

मत्ती 13:55 याकूब को मरियम के कई पुत्रों में और यीशु के सौतेले-भाई के रूप में परिचित कराता है। यह पारिवारिक रिश्ता याकूब की पत्री और यीशु की सुसमाचारों में विवरण की गई शिक्षाओं के साथ कई स्थानों पर समानता को दिखाते हो। परन्तु पवित्रशास्त्र यह स्पष्ट कर देता है कि जब याकूब और इसके अन्य भाई का पालन पोषण हो रहा था, तो उन्होंने यह पहचान नहीं की कि वास्तव में उनका कौन सा भाई सबसे बड़ा था। जैसा कि यूहन्ना 7:5 हमें बताता है:

क्योंकि उसके [यीशु] भाई भी उसके ऊपर विश्वास नहीं करते थे (यूहन्ना 7:5)।

परन्तु अपने जीवन की किसी अवस्था में, याकूब ने यीशु को प्रभु मानते हुए उसमें उद्धार पाने वाले विश्वास को पाया होगा। सच्चाई तो यह है, कि याकूब आरम्भिक कलीसिया में ऐसे मुख्य स्थान तक ऊपर उठ गया कि पौलुस ने उसे गलातियों 2:9 में कलीसिया के लिए "खम्भों" में से एक कह कर पुकारा है। इसके अतिरिक्त, हम यह जानते हैं, कि 1 कुरिन्थियों 15:7 के अनुसार, यीशु याकूब के सामने जी उठने के पश्चात् प्रगट हुआ था।

नए नियम में याकूब के अधिकार का पद अच्छी तरह से दस्तावेज किया गया है। उदाहरण के लिए, वह प्रेरितों के काम में यरूशलेम की कलीसिया में एक अगुवे के रूप में कम से कम तीन बार प्रगट होता है। और प्र०रितों के काम 15 में, हम उसे प्रेरितों की महासभा के प्रवक्ता के रूप में देखते हैं। यहाँ तक कि गैर-मसीहियों ने भी याकूब की महत्वपूर्णता को कलीसिया में स्वीकार किया था। याकूब की 62 ईस्वी सन् में हुई हिंसक मृत्यु के बारे में एक बहुत ही अधिक जाना पहचाना लेखककार्य यहूदी इतिहासकार जोसीफुस की ओर से लिखा हुआ मिलता है। उसकी पुस्तक *ऐन्टीक्वटीस* अर्थात् 'इतिहास की घटनाओं', की 20वीं पुस्तक, के 9वें अध्याय, के भाग 1, को सुनिए जो 93 ईस्वी सन् में लिखा गया था, जहाँ पर जोसीफुस ने याकूब की मृत्यु के आसपास की परिस्थितियों के बारे में विवरण दिया है:

[हन्ना] ने न्यायियों का बुला कर यहूदी महासभा का आयोजन किया, और उनके सामने यीशु, जिसे मसीह कह कर पुकारा जाता था, के भाई, जिसका नाम याकूब था, और कुछ अन्य निश्चित लोगों को ले आया, और उन पर व्यवस्था की अवहेलना किए जाने का आरोप लगा कर उन्हें पत्थरवाह करने के लिए दे दिया।

जब वह बड़ा हो रहा था, तो याकूब यह नहीं समझ पाया होगा कि उसका वास्तव में सबसे बड़ा भाई कौन सा था। परन्तु, हम जोसीफुस के लेखनकार्य, और पवित्रशास्त्र और अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों से देख सकते हैं, बाद में अपने प्रौढ़ जीवन में, याकूब के पास यीशु के प्रति उसके मसीह मानते हुए उसमें अटल समर्पण था। जैसा की ईशुबियुस ने अपने *ईक्लेसियसिटीकल हिस्टरी* अर्थात् 'सभोपदेशानात्मक इतिहास,' कि पुस्तक 2 के अध्याय 23 में, आरम्भिक मसीही इतिहासकार हिगेसीपिप्युस को उदधृत किया है:

[याकूब] याकूब, यहूदी और यूनानी दोनों के लिए एक सच्चा गवाह बन गया, कि यीशु ही मसीह है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अब क्योकि हमने याकूब की पत्री की पृष्ठभूमि को इसके लेखक से सम्बन्धित कुछ विषयों को देखने के द्वारा ध्यान दे दिया है, आइए हम इस पत्री के मूल पाठकों की खोज करते हैं।

मूल पाठक

धर्मवैज्ञानिक अक्सर किसी भी बाइबल की एक पुस्तक के लेखक के बारे में बड़ी मात्रा में अपने समय और उर्जा को खत्म करते हुए जितना ज्यादा अधिक संभव हो सीखने की कोशिश करते हैं। परन्तु मूल पाठकों की पहचान की खोज करना भी उतना ही अधिक महत्वपूर्ण है। यदि हम उचित रीति से व्याख्या करना चाहते हैं कि बाइबल की एक पुस्तक का लेखक क्या कहना चाहता था, तो यह जानना हमारे लिए सहायता प्रदान करता है कि लेखक के मूल पाठक कौन थे और वे उस समय के इतिहास के विशेष समय में किन परिस्थितियों का सामना कर रहे थे। जैसा कि हमने पहले से ही देख लिया है, कि याकूब 1:1 में, याकूब उसके पाठकों की पहचान ऐसे कराता है:

उन बारहों गोत्रों को जो तितर बितर होकर रहते हैं (याकूब 1:1)।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह संकेत उन यहूदियों के लिए दिया गया है जो कि इस्राएल से बाहर रहते थे। और 2:1 में, याकूब अपने पाठकों को ऐसे सम्बोधित करता है:

हे मेरे भाइयों, हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह का विश्वास तुम में पक्षपात के साथ न हो (याकूब 2:1)।

इन दोनों को इकट्ठा लिया जाए, तो ये वचन यह संकेत देते हैं कि याकूब के मूल पाठक प्राथमिक रूप से, यहूदी मसीहियों से मिल कर बने थे जो कि पलश्तीन से बाहर रहते थे।

इस पुस्तक में बहुत से स्थानों पर, याकूब उसके पाठकों को प्यार से "हे भाईयों" कह कर सम्बोधित करता है। परन्तु कैसे याकूब, यरूशलेम में रहते हुए, उसके पाठकों को इतनी अच्छी तरह से जानता है कि वह उन्हें इस तरीके से बोलता है? ठीक है, प्रेरितों के काम 8:1-4 में, हम सीखते हैं, कि सताव की लहर के समय जो कि स्तिफनुस की शहादत के पश्चात् आया, यरूशलेम की कलीसिया के सदस्य सम्पूर्ण यहूदिया और सामरिया में तितर बितर हो गए थे। यह संभव है कि तब याकूब, यरूशलेम की कलीसिया का अगुवा होने के नाते, इन्हीं तितर बितर हुए सदस्यों को "बारह गोत्रों" के नाम से लिख रहा हो। परन्तु भले ही पत्री इन विश्वासियों को विशेष रूप से ही क्यों न सम्बोधित हुई हो, ऐसा प्रतीत होता है कि याकूब के पाठक उन ही जैसी परिस्थितियों में यहूदी मसीहियों से मिलकर बने थे।

जिस शब्दावली का यहाँ उपयोग हुआ है वह इस विचार का समर्थन करती है कि उसके मूल पाठक यीशु के यहूदी अनुयायी थे। उदाहरण के लिए, 2:2 में, याकूब शब्द *सूनागोगी* (συναγωγη) या "सिनागोग" का उपयोग उसके पाठकों की सभाओं का विवरण देने के लिए करता है। यह यहूदियों के एकत्र होने को इंगित करने के लिए विशेष तरीका था। और 5:4 में याकूब वाक्य सेनाओं के प्रभु या "प्रभु सर्वशक्तिमान," या कुरियोस साबोथ (Κυρίου Σαβαὼθ) का उपयोग करता है। यह वाक्य पुराने नियम में से इस्राएल कठे परमेश्वर के लिए उपयोग किए जाने वाले सामान्य नाम से आता है, अर्थात् *यावेह साबाओत* (צְבָאוֹת יְהוָ ֹה)। इस तरह की भाषा बहुत अधिक भावों को उत्पन्न करती है यदि पत्री को प्राप्त करने वाले पाठकों के यहूदी आधार मजबूत थे।

याकूब के पाठकों की पृष्ठभूमि जानना बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमारी सहायता हमें प्रक्षेपण पथ को निर्मित करने में करता है कि कैसे उस सन्देश को समझा जाए जिसे वह अपने

पाठकों को देने की कोशिश कर रहा है...याकूब के पाठक, यहूदी समुदाय के होने के कारण, मूसा की तोराह, भविष्यद्वक्ताओं के सन्देश और लेखों के सन्देश की एक लम्बी परम्परा को प्राप्त करने वाले लोग थे...याकूब इस समृद्ध परम्परा के ऊपर निर्मित करता है जब वह उसने विश्वास के जीवन, बुद्धिमानी के जीवन के बारे में बात करता है। और उन्हें समझने की आवश्यकता है कि कैसे उन्हें इन्हें अपने जीवनों में यीशु मसीह के जी उठने के आलोक में लागू करना है। - डॉ स्कॉट रीड

अब, जब हम यह कहते हैं कि याकूब यहूदी मसीहियों को लिख रहा था, तो हमारे कहने का यह अर्थ नहीं है कि वहाँ पर उन कलीसियाओं जिन्हें याकूब ने सम्बोधित किया है, में गैर मसीही विश्वासी नहीं थे। प्रेरितों के काम अध्याय 8 में से बहुत पहले ही हम एक कूश देश के अधिकार को परिवर्तित होने के बारे में जान जाते हैं। और, जैसा कि हम प्रेरितों का काम अध्याय 10 में सीखते हैं, कि वहाँ पर बहुत से गैर मसीही विश्वासी, परमेश्वर से डरने वाले लोग यहूदीवाद में से निकल कर आए थे जो कि सिनागोग की आराधना में भाग लिया करते थे। इसलिए, इस बात का जानना हमें अचम्भित करने वाला नहीं होना चाहिए कि कम से कम कुछ गैर मसीही विश्वासियों को हम इन कलीसियाओं में भी पाते हैं। परन्तु फिर भी, रोमियों 9:8 के अनुसार, गैर मसीही विश्वासियों को "अब्राहम के वंश" के रूप में माना गया है। और, आदर्श के रूप में, उन्हें ठीक उसी तरह से उतना ही भाग इस्राएल के बारह गोत्रों में माना गया जितना यूहदी अपने लहू के सम्बन्ध के कारण थे।

अब क्योंकि हमने याकूब की पृष्ठभूमि को उसकी पत्री के लेखक और इसके मूल पाठकों के ऊपर ध्यान देते हुए देख लिया है। अब, हम इसकी लेखनकाल के अवसर की जाँच करने के लिए तैयार हैं।

अवसर

हम याकूब की पत्री के लेखनकाल के अवसर की तीन चरणों में खोज करेंगे। सर्वप्रथम, हम लेखक और पाठकों अर्थात् दोनों के स्थान को स्पर्श करेंगे। दूसरा, हम इसकी रचना की तिथि के ऊपर विचार करेंगे। तीसरा, हम याकूब की पत्री के लिखने के उद्देश्य के बारे में सोचेंगे। आइए इस पत्र के पाठकों और लेखक अर्थात् दोनों के स्थान की ओर देखते हुए आरम्भ करें।

स्थान

लेखक के स्थान को समझना ज्यादा कठिन नहीं है। दोनों अर्थात् नया नियम और आरम्भिक कलीसियाई धर्माध्यक्षों ने यह सुझाव दिया है कि याकूब ने अपनी सेवकाई के जीवन को यरूशलेम में व्यतीत किया। और तब तक यरूशलेम में नहीं रहा जब तक 62 ईस्वी सन् में उसने शहादत प्राप्त नहीं कर ली। इस कारण, ऐसा सोचने के लिए कोई भी कारण नहीं है कि उसने अपने पत्र को किसी अन्य स्थान से लिखा।

मूल पाठकों के स्थान भी कुछ सीमा तक स्पष्ट दिखाई देता है। जैसा कि उल्लेख किया गया है, कि पत्री को प्राप्त करने वालों की संभावना यहूदी विश्वासियों से रही है जो कि सम्पूर्ण यहूदिया और सामारिया में स्तिफनुस की हत्या के कारण तितर-बितर हुए पड़े थे। प्रेरितों का काम 11:9 हमें बताता है कि ये विस्थापित विश्वासी फिरते फिरते फीनीके, अन्ताकिया और साइप्रस में जीवन यापन के लिए सुरक्षित स्थान के कारण पहुँच गए। हम सकारात्मक नहीं हो सकते हैं कि याकूब ने इन विशेष स्थानों में रहने वाले विश्वासियों के लिए इस पत्र को लिखा। परन्तु फिर भी, याकूब के आरम्भिक अभिवादन "बारह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

गोत्रों को जो जातियों में तितर-बितर होकर रहते हैं," में इन स्थानों में याकूब के मूल पाठकों के होने की दृढ़ता से संभावना है।

> **हमें वास्तव में यह लगता है कि यह सच में बिखरे हुए गोत्र थे। अर्थात्, यरूशलेम की कलीसिया के सदस्य जो फीनिके और साइप्रस और अन्ताकिया में स्तिफनुस की शहादत के पश्चात् आए हुए सताव के कारण बिखर गए, यह कि इसकी संभावना अधिक है, सच्चाई तो यह है कि मैं सोचता हूँ कि ऐसा होना अधिक संभव है, कि याकूब इन लोगों को अपनी कलीसिया के सदस्य मानते हुए लिख रहा था। और मेरे लिए ऐसा सोचने का कारण, यह है कि वह, अंचभे की बात है, कि वह किसी तरह का कोई धर्मविज्ञान नहीं देता या वस्तुत: कुछ भी खुलकर नहीं कहता; वह सुसमाचार की संरचना के संदर्भ में कुछ भी बात नहीं करता है। ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनका वह बिल्कुल भी उल्लेख नहीं करता है, और एक पास्टर होने के नाते, मैं सोच रहा हूँ, कि ठीक है, हो सकता है कि उसने इन बातों को पहले ही अपनी सेवकाई में पूरा कर लिया होगा, और अब वह अपने अच्छी तरह से जानकार पाठकों से इस तरीके से बात कर रहा है जिस तरीके से एक पास्टर को करना चाहिए...और इसलिए, याकूब के प्रति हमारे भाव के ऊपर इसके बहुत गहरे प्रभाव हैं, कि हम उसके पाठकों को बिखरा हुआ पाते हैं, ये पाठक पहले से उसकी सेवकाई के अधीन थे, और हम उसे इस तरीके से उनका निर्माण करते हुए देखते हैं। - डॉ. माईकल केनीसन**

याकूब की पत्री के अवसर के इस पहले पहलू को अपने ध्यान में रखते हुए – अर्थात् लेखक और पाठकों के स्थान को – अब, आइए हम पत्र के लिखने की तिथि के ऊपर ध्यान दें।

तिथि

इस पत्री की सबसे पहले और संभावित नवीनत्तम तिथि को स्थापित करना बहुत ही आसान है। सर्वप्रथम, पत्र की रचना की सबसे पहले संभावित तिथि 44 ईस्वी सन् हो सकती है। हम जानते हैं कि याकूब ने इस पत्री को तब लिखा जब वह यरूशलेम में आरम्भिक कलीसिया का एक अगुवा था। प्रेरितों का काम 12:17 इंगित करता है कि याकूब यरूशलेम की कलीसिया में एक महत्वपूर्ण अगुवा उस समय बन गया जब पतरस की रिहाई बन्दीगृह से हुई थी। प्रेरितों का काम 12:19-23 के अनुसार, पतरस उस समय बन्दीगृह से रिहा हुआ था जिस वर्ष हेरोदेस अग्रिप्पा- I की मृत्यु 44 ईस्वी सन् में हुई थी। यह इस संभावना को अधिक बढ़ा देता है कि पत्री इस तिथि से बहुत पहले नहीं लिखी गई थी।

दूसरा, इस पत्री की रचना की सबसे नवीत्तम तिथि की संभावना 62 ईस्वी सन् रही होगी, वह वर्ष जिसमें याकूब शहीद हुआ था। जैसा कि हमने पहले देखा है, जोसीफुस के अनुसार, याकूब याजक हन्ना के हाथों इसी समय के आसपास मरा था। यह इस पत्री की रचना के लिए संक्षिप्त झलक को प्रदान करता है।

पत्री स्वयं एतिहासिक घटनाओं के विशेष संदर्भों को सम्मिलित नहीं करती है जो कि इसी तिथि को अधिक निश्चित कर देते। परन्तु इसकी रचना के बहुत बाद की अपेक्षा पहले होने के लिए कम से कम दो कारण को सोचने पर मजबूर कर देते हैं।

पहला कारण, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, 2:2 में, याकूब ने *सुनागोग* (συναγωγη) या "सिनागोग" शब्द का उपयोग उसके पाठकों के मिलने के सभाओं के विवरण के लिए किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

शब्द "सिनागोग" का उपयोग मसीही अन्दोलन की आरम्भिक अवस्था के विकास को दिखाई देता हुआ प्रतीत होता है। याकूब ने मसीहियों को सिनागोग में से निकाल बाहर करने से पहले लिखा होगा। या, इसकी संभावना बहुत कम है, कि उसने इसे उस समय लिखा जब मसीही विश्वासी अभी भी अपने इक्ट्ठे होने को एक "सिनागोग" के रूप में पुकारते थे।

इसके अतिरिक्त, याकूब की पत्री में यहूदी-गैर मसीहियों के मध्य किसी तरह के कोई विवाद का उल्लेख नहीं मिलता है जिसने पतरस और पौलुस के लेखों में बहुत अधिक ध्यान को प्राप्त किया हो।

आरम्भिक कलीसिया में, जब गैर – मसीही मसीह के ऊपर एक बड़ी सँख्या में विश्वास को ले आए, तो इस बात को लेकर संघर्ष उठ खड़ा हुआ कि नए विश्वासियों को यहूदी रीति रिवाजों को पालन करने की आवश्यकता है या नहीं। कदाचित् याकूब ने हो सकता है कि इन विवादों का निपटारा करना न चुना हो। परन्तु यह संभावना अधिक है कि वे अभी उन जवान कलीसियाओं के जीवन के मुख्य कारण के रूप में नहीं बने हैं जिन्हें याकूब ने सम्बोधित किया है।

इस पत्री के अवसर को दोनों अर्थात् इसके स्थान और इसकी तिथि में देख लेने के पश्चात्, आइए हम इस पत्री को लिखने के पीछे याकूब के उद्देश्य की जाँच करें।

उद्देश्य

याकूब की पत्री के व्यापक उद्देश्य को सारांशित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तरीकों में से एक याकूब 1:2-4 को देखना है। पत्री के आरम्भिक शब्दों में, याकूब अपने पाठकों को कहता है कि:

> **हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसे पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे (याकूब 1:2-4)।**

जैसा कि यह संदर्भ इंगित करता है, याकूब के पाठक कई तरह की परीक्षाओं को सामना कह रहे थे। परन्तु याकूब उन्हें बुलाहट देता है कि इन परीक्षाओं में से पूरे आनन्द को प्राप्त करें। परखे जाने के लिए, वह विवरण देता है कि यह धीरज को उत्पन्न करता है। और वे जिनके पास धीरज है वह "परिपक्व और सिद्ध बिना किसी घटी के" बन जाएँगे। परन्तु याकूब के सन्देश की वास्तविक कुँजी इसके ठीक अगले वचन में आती है। वचन 5 में, याकूब ने अपने विचार को इन शब्दों के साथ पूरा किया है:

> **पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उस को दी जाएगी (याकूब 1:5)।**

हम इन वचनों को इस अध्याय में बाद में और अधिक व्याख्या के साथ विचार विमर्श करेंगे। परन्तु अभी के लिए, यह संदर्भ हमें इस पूरे पत्र के केन्द्र की एक झलक देता है। परीक्षाओं के मध्य पूरे आनन्द का अनुभव लेने के लिए परमेश्वर से "बुद्धि की माँग" करें, और "यह तुम्हें दे दी जाएगी।" इस बात को ध्यान में रखते हुए, हम याकूब के पत्र के मुख्य उद्देश्य को इस तरह से सारांशित कर सकते हैं:

> **याकूब ने उसके पाठकों को परमेश्वर की ओर से प्राप्त ज्ञान का अनुसरण करने के लिए बुलाहट दी ताकि उन्हें उनकी परीक्षाओं में आनन्द प्राप्त हो।**

इस सन्देश को सुनना याकूब के पाठकों के लिए महत्वपूर्ण था। जैसा कि हमने पहले ही कह दिया है, कि याकूब के पाठक पलश्तीन में नहीं रह रहे थे। वे "जातियों में तितर-बितर" हो कर अपने घरों से दूर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

रहे थे। इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि उन्हें उनकी परीक्षाओं में आनन्द को प्राप्त करना इतना आसान नहीं था। ऐसा प्रतीत होता है कि इसके कारण उनमें से कुछ ने मसीह के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता को त्याग दिया था। इसकी अपेक्षा, वे उस बात का अनुसरण कर रहे थे जिसे याकूब "संसार के साथ मित्रता" कह कर पुकारता है। याकूब 4:4 को सुनिए जहाँ पर याकूब ने इन शक्तिशाली शब्दों को उपयोग किया है:

हे व्यभिचारिणियों, क्या तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? अत: जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है (याकूब 4:4)।

स्पष्ट है कि, याकूब के पाठकों में से कुछ ऐसे थे जो विश्वास से बहुत दूर थे। और याकूब उन्हें चेतावनी देता है कि संसार के साथ मित्रता करना "परमेश्वर के साथ बैर" करना था।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि याकूब ने अपने अधिकार को कलीसिया के ऊपर एक अगुवा होने के नाते उपयोग किया। याकूब ने उसके पाठकों को ऐसा जीवन यापन करने के लिए आदेश दिया जो कि गंभीरता भरे विश्वास के अंगीकार के सुंसगत तरीके में हो। उसने 50 से ज्यादा आदेशात्मक वचनों, या अपने 108 वचनों में प्रत्यक्ष आदेशों को उपयोग किया है। और उसने अन्य व्याकरणीय रूपों का उपयोग किया है जो कि अपने संदर्भ में आदेशात्मक वचनों के रूप में कार्य करते हैं।

परन्तु याकूब के द्वारा उसके पाठकों के लिए सामना की जाने वाली समस्याओं के लिए मुख्य समाधान इस या उस आदेश में ही मात्र नहीं दिया गया है। क्योंकि उसके लिए, मुद्दे का मुख्य केन्द्र यह था कि उन्हें परमेश्वर की ओर से प्राप्त ज्ञान को अनुसरण करने की आवश्यकता थी। परमेश्वर की ओर से आने वाला ज्ञान आनन्द को प्राप्त करने की कुँजी थी जब वे विभिन्न तरह की अपनी कई परीक्षाओं में जीवन यापन करते थे। 4:8-10 के जाने-पहचाने शब्दों को सुनिए जहाँ पर याकूब ने उसके पाठकों को कहा है:

परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा... प्रभु के सामने सामने दीन बनो तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा (याकूब 4:8-10)।

याकूब ने विश्वासियों को निर्देश दिया कि वे [अपने आप को] परमेश्वर के सामने दीन करें ताकि परमेश्वर [उन्हें] ऊपर उठा दे। उसने सीखाया कि परमेश्वर के सामने नम्रता ज्ञान प्राप्ति के लिए एक मार्ग है। और जब मसीह के विश्वासी परमेश्वर के सामने नम्रता के साथ अधीन होते हुए आते हैं, तो प्राप्त किए जाना वाला ज्ञान आनन्द को लेकर आता है, यहाँ तक कि जब वे धीरज के साथ परीक्षाओं को सामना करते हैं।

अभी तक हमने *याकूब की पत्री के परिचय* में, हमने याकूब की पत्री की पृष्ठभूमि की ओर देखा है। अब हम इस पत्री की सरंचना और विषय-वस्तु सूची की जाँच करने के लिए तैयार हैं।

सरंचना एवम् विषयवस्तु सूची

जैसा कि हमने अभी अभी यह सुझाव दिया है कि याकूब की पत्री अपने बहुत बड़े भाग को ज्ञान के ऊपर अपने ध्यान०ाकर्षित करते हुए इसका निपटारा करती है कि जो परीक्षा के समय में आनन्द प्राप्त करने का एक मार्ग है। परन्तु ज्ञान के ऊपर यह ध्यानाकर्षण इस पुस्तक के उद्देश्य से और भी बहुत कुछ ज्यादा बातों को समझने में हमारी सहायता करता है। बहुत से व्याख्याकारों ने याकूब की पत्री की पुस्तक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

के बारे में बोला है कि यह नए नियम की ज्ञान की पुस्तक है। और यह दृष्टिकोण हमारी भी सहायता करता है कि हम इस पत्री की असामान्य सरंचना और विषयवस्तु को आत्मसात करें।

जिस समय याकूब ने इस पत्र को लिखा, पुराने नियम से आरम्भ होकर बुद्धि या प्रज्ञा साहित्य का एक लम्बा इतिहास रहा है। पुराने नियम की पुस्तकों के लेखों में अय्यूब और सभोपदेशक, साथ ही नीतिवचन के लेख सम्मिलित हैं और साथ ही कहे जाने-वाले तथाकथित बुद्धि के भजन और भविष्यद्वक्ताओं की बुद्धि की लकोक्तियाँ सम्मिलित रही हैं। याकूब कई तरीके से पुराने नियम के इस बुद्धि साहित्य के लिए ऋणी रहा है। उदाहरण के लिए, 5:11 में, याकूब ने अय्यूब के उदाहरण को उपयोग किया है, जो कि अय्यूब की पुस्तक का मुख्य चरित्र है, कि धीरज को बढ़ावा दे। इससे आगे, याकूब ने ऐसे विषयों को स्पर्श किया है जैसे भाषणों, विधवाओं और अनाथों से साथ व्यवहार, गरीबी और पक्षपात आदि। ये विषय नीतिवचन की पुस्तक की विषय वस्तु के साथ कई समानान्तरों को प्रदर्शित करते हैं।

जब हम याकूब की पत्री को पूरी तरह से पढ़ते हैं, तो एक बात जिसे हमें एक सामान्य धागे के रूप में देखते हैं वह शब्द "ज्ञान" या बुद्धि है। वह स्पष्ट रूप से ज्ञान को ज्यादा मूल्य देता है – ऊपर से आने वाला ज्ञान नीचे के ज्ञान के विरोध में है। और ज्ञान के ऊपर दिए हुए ज्यादा मूल्य और पत्री की सरंचना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि उसके जीवन के ऊपर बुद्धि या प्रज्ञा साहित्य का बहुत अधिक प्रभाव रहा है जो कि उसके सामने आया था। अब, मैं सोचता हूँ कि हम उसके उद्धरण में इसे और नीतिवचन की पुस्तक के उपयोग को बहुत ही अधिक स्पष्टता से देखते हैं, और उस तरीके को भी जिसमें वह हमारे प्रभु, यीशु के शब्दों को स्मरण करता है, जिसने अक्सर बुद्धि के संदर्भ में बात की...इसी के साथ, बुद्धि के विचारों और बुद्धि के लेखनकार्य में विकास था, बुद्धि का लेखनकार्य, दोनों नियमों के मध्य के समय में एक वास्तविक साहित्यिक शैली थी। और मैं सोचता हूँ कि हम कुछ ऐसे ही विषयों को याकूब के बुद्धि साहित्य में देखते हैं। कभी कभी हम उसी जैसी सरंचना को देखते हैं। परन्तु मैं सोचता हूँ कि बहुत से विषय वास्तव में नीतिवचन की पुस्तक और यीशु के साथ भी आरम्भ होते हैं और इसलिए मैं सोचता हूँ कि याकूब के ऊपर इसका बहुत बड़ा प्रभाव कदाचित् यीशु और नीतिवचन से निकल कर आता है। परन्तु वह शैली और नीतिवचन आधारित बुद्धि साहित्य की महत्वपूर्णता सम्पूर्ण रूप से यहूदीवाद के अद्वितीय मन्दिर, यीशु से समय के लगभग, याकूब के लिए भी बहुत अधिक महत्वपूर्ण है।

- डॉ डेविड डब्लूय चॉपमैन

याकूब की पत्री साथ ही पवित्रशास्त्र से बाहर की प्रभावशाली पुस्तकें जैसे *सीराख का बुद्धि साहित्य,* जिसे साधारण रूप से सीराख के नाम से भी जाना जाता है, और *सुलेमान का बुद्धि साहित्य* की पुस्तकों की विषयवस्तु के प्रभाव को भी प्रदर्शित करती है। ये पुस्तकें याकूब के दिनों में बहुत अधिक प्रचलित थी, और उनकी इस पत्र के साथ बहुत ही महत्वपूर्ण समानताएँ हैं। एक उदाहरण के लिए, 1:26 में सीराख से हम ऐसा पढ़ते हैं कि:

यदि तू बुद्धि की प्राप्ति चाहता है, तो आज्ञाओं को मान और प्रभु तुझे यह दे देगा।

और याकूब 1:5 हमें बताया गया है कि:

पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उस को दी जाएगी (याकूब 1:5)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इस तरह के बुद्धि साहित्य के अतिरिक्त, यीशु के सुसमाचारों में लिखे हुए बहुत से निर्देशों के गुण इस्राएल में बुद्धि साहित्य की शिक्षाओं में पाये जाते थे। और व्याख्याकारों ने याकूब के लेखों और यीशु के निर्देशों में बहुत से सामान्यताओं के ऊपर ध्यान दिया है। उदाहरण के लिए, ध्यान दें, मत्ती 5:10 के ऊपर, जहाँ पर यीशु ने कहा कि:

धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है (मत्ती 5:10)।

इस वचन की तुलना याकूब 1:12 के साथ करें, जहाँ पर याकूब ने लिखा कि:

धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है, क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों से की है (याकूब 1:12)।

पहली सदी में और इससे थोड़ा पहले यहूदी धर्म के बुद्धि साहित्य का याकूब के ऊपर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा, विशेष रूप से सांस्कृतिक और साहित्यिक वातावरण के संदर्भ में जिसमें वह कार्यरत् था। सच्चाई तो यह है, कि याकूब और अन्य साहित्य में दोनों अर्थात् पुराने नियम और यहूदियों के साहित्य दोनों में बहुत से संकेत और समानताएँ हैं। आप जानते हैं कि याकूब नीतिवचन से दो बार उद्धरण देता है, कम से कम एक बार और कदाचित् दो बार, और उसने बहुत से संकेत यीशु बेन सीराख से विशेष रूप से लिए हैं, एक ऐसा लेखनकार्य जो कि नए नियम के समय में, एक सदी पहले लिखा गया था...परन्तु यहाँ पर एक बात याकूब के बारे में है जो कि बुद्धि के संदर्भ में याकूब के लिए बहुत ही विशेष है, और यह वह है कि, वह अपने ज्ञान को घनिष्ठता से यीशु की शिक्षाओं के साथ सम्बन्धित करता है...यीशु कदाचित् नए नियम में एक सबसे ज्यादा रंगीन उदाहरणों में से एक है जो कि ऐसे जहाजों के साथ चित्रित किया गया है जो छोटे पतवारों और किसानों और यात्रा करते हुए व्यापारियों के द्वारा चलाया जा रहा है जो उसकी प्रतीक्षा धैर्य के साथ कर रहे हैं। यहाँ पर बहुत से, बहुत से उदाहरण दिए गए हैं। यही कुछ बुद्धि साहित्य का प्रभाव है। परन्तु याकूब की विषयवस्तु सूची वास्तव में आगे की ओर इस तरह से बढ़ रही है जिसमें यीशु एक राज्य को और उस तरीके को प्रस्तुत करता है जिसमें राज्य की उपस्थिति आपके जीवन को परिवर्तित कर देती है। - डॉ. डॉन मैक्कार्टने

क्योंकि याकूब का सम्बन्ध घनिष्ठता के साथ बुद्धि साहित्य के साथ है, इसलिए इस पत्री की सरंचना जैसा क हम अपेक्षा करते हैं उसकी तुलना में बहुत अधिक भिन्न है। यहाँ तक कि एक संक्षिप्त दृष्टिकोण इस पत्र के ऊपर हमें बताता है कि इसका संगठन अत्यन्त साधारण है। सच्चाई तो यह है कि, हमारे आधुनिक दृष्टिकोण से, यह असंगठित प्रतीत दिखाई दे सकता है। बहुत कुछ नीतिवचन की पुस्तक की तरह, याकूब बहुत से महत्वपूर्ण विषयों को निपटारा करता है। और अक्सर किसी दूसरे विषय की ओर जाने से पहले कुछ ही वचन इनके लिए देता है। कभी कभी, वह एक या अधिक विषयों की ओर पत्र के अन्त में मुड़ता है, परन्तु बिना किसी सुसंगत तरीके से। कुछ व्याख्याकारों ने यह सारांश निकाला है कि याकूब के पत्र की कोई सरंचना है ही नहीं। उन्होंने सुझाव दिया है कि यह केवल बुद्धि की बातों का संकलन मात्र बिना किसी क्रम और विचार के बहाव के है।

परन्तु हमें यहाँ पर सावधान रहने की आवश्यकता है। यह पत्र बिना किसी आदेश के असम्बन्धित वचनों को इकट्ठा करके अव्यवस्थित गड़बड़ मात्र नहीं है। यद्यपि याकूब की पत्री की पुस्तक दोनों अर्थात् अपनी सरंचना और विषयवस्तु सूची में बुद्धि साहित्य के साथ समनाताओं में है, पर साथ ही इसमें भिन्नता कई तरीकों से इसकी साहत्यिक शैली में है। अन्य बुद्धि साहित्य के विपरीत, याकूब की पत्री एक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

ऐसा पत्र है जो विशेष कलीसियाओं को लिखा गया है। और इसी कारण से, यह नए नियम की कई अन्य पत्रियों के कुछ संगठनात्मक गुणों को प्रतिबिम्बित करता है।

याकूब की पत्री की संगठन या सरंचना के विषय के ऊपर कुछ ही व्याख्याकारों मेंं थोड़ी सी सहमति है। परन्तु इस अध्याय के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, हमने इस पुस्तक को सात खण्डों में विभाजित कर दिया है।

- याकूब की पत्री का आरम्भ याकूब 1:1 में याकूब के अभिवादन से होता है।
- पहला मुख्य विभाजन इस पुस्तक के मुख्य विषयों के परिचय के साथ होता है जिसे हम याकूब की पत्री 1:2-18 में ज्ञान या बुद्धि कह कर पुकार सकते हैं।
- दूसरा मुख्य विभाजन याकूब 1:19-2:26 में ज्ञान और आज्ञाकारिता के लिए याकूब के सरोकार को व्यक्त करता है।
- तीसरा मुख्य विभाजन याकूब 3:1-4:12 में मसीही समाज में ज्ञान और शान्ति का निष्पादन करता है।
- चौथा मुख्य विभाजन याकूब 4:13-5:12 में ज्ञान और भविष्य के ऊपर ध्यानकेन्द्रित करता है।
- चौथा और पाँचवाँ मुख्य विभाजन इस बात के लिए समर्पित है जिसे हम याकूब 5:13-18 में ज्ञान और प्रार्थना कह कर विवरण दे सकते हैं।
- इन पाँच मुख्य विभाजनों के पश्चात् 5:19 और 20 में निष्कर्ष के रूप में उत्साह दिए जाने वाले उपदेश हैं।

आइए इनमें से प्रत्येक विभाजन, को याकूब 1:1 में दिए हुए अभिवादन के साथ आरम्भ करते हुए निकटता के साथ देखें।

अभिवादन (1:1)

एक बार फिर से याकूब 1:1 के छोटे नमस्कार को सुने:

परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के दास याकूब की ओर से उन बारहों गोत्रों को जो तितर-बितर होकर रहते हैं: नमस्कार पहुंचे (याकूब 1:1)।

हमें इस बात को खो नहीं देना चाहिए कि कैसे याकूब स्वंय का विवरण यहाँ देता है। वह स्वयं को "परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के दास" के रूप में बुलाता है। याकूब स्वयं को कलीसिया के अगुवे, या यहाँ तक की यीशु के भाई के रूप में परिचित कर सकता था। इसकी अपेक्षा, उसने यहाँ इस बात को कहना चाहा वह परमेश्वर और मसीह का दास था। यह दोहरा संदर्भ हो सकता है कि याकूब की नम्रता के लिए व्यक्तिगत् कथन हो, जो कि एक ऐसा विषय है जिसे उसने बाद में अपनी पुस्तक में स्पर्श किया है। यहाँ वह नम्रता का उदाहरण यह स्पष्ट करते हुए देता है कि अपने भाई, यीशु का दास था।

इस अभिवादन के पश्चात्, पहला मुख्य विभाजन का ध्यानाकर्षण उसके ऊपर है जिसे हम ज्ञान और आनन्द कह कर पुकारते हैं।

ज्ञान और आनन्द (1:2-18)

याकूब ने अपनी इस पत्री को उन मसीहियों को लिखा जो कि यरूशलेम से खदेड़ दिए गए थे और सम्पूर्ण भूमध्यसागरीय संसार में बिखरे हुए थे। वे विभिन्न तरह की परीक्षाओं को सामना कर रहे थे जिसके लिए कोई सन्देह नहीं है कि वे हतोत्साहित हो गए थे। और इसी कारण से, याकूब के ज्ञान की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

महत्वपूर्णता के लिए प्रथम शब्द आनन्द की बुलाहट के साथ आरम्भ होते हैं। सुनिए याकूब 1:2 को जहाँ पर याकूब अपने पाठकों को ऐसे कहता है:

हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसे पूरे आनन्द की बात समझो (याकूब 1:2)।

यह प्रसंग हमें अनोखा सा लग सकता है, विशेषकर इसलिए क्योंकि यह ऐसे लोगों को सम्बोधित किया गया है जो कि "नाना प्रकार की परीक्षाओं" का सामना कर रहे थे। परन्तु याकूब उन्हें आग्रह करता है कि वे इन परीक्षाओं को "पूरे आनन्द" की बात समझे यह वैसा **अ**सामान्य नहीं है जैसा कि हम सोचते हैं।

वाक्य "पूरा आनन्द" यूनानी भावार्थ *पासान चारन* (πᾶσαν χαρὰν) से आता है, जिसका अनुवाद "पूरे, असीमित आनन्द" के रूप में किया जा सकता है। इस तरह का उत्साह याकूब के दिनों में पाए जाने वाले अन्य बुद्धि साहित्य के साथ सही समानता में आता है। कई बार, बुद्धि साहित्य ने उन लोगों को उत्साहित किया जो दुख उठाने के द्वारा स्वयं को आशीषित समझते थे। उदाहरण के लिए, यीशु ने मत्ती 5:12 में धन्य वचनों के अन्त में सताव का सामना करते हुए इसमें "आनन्दित और मगन" होने की बात की है।

जैसा कि पहले कहा गया है, कि 1:3-4 में, याकूब ने शिक्षा दी है कि परीक्षाओं के द्वारा धीरज विश्वासियों को "परिपक्व और पूरा" बनाता है। दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर के लिए कठिनाईयों का सामना करते हैं, तो वे अपने पूरे डील डौल में बढ़ते हैं जिसकी चाहत परमेश्वर ने उनके लिए की है। परन्तु वास्तविकता यह है, कि यह अकसर बहुत ही कठिन है यहाँ तक कि सबसे गंभीर विश्वासी के लिए भी यह देखना कठिन बात है कि कैसे दुख में होकर जाना सत्य बात है। इस लिए ही, बिल्कुल ठीक अगले वचन में, याकूब उसके पाठकों को परमेश्वर से आने वाली बुद्धि का अनुसरण करने के लिए कहता है। आपको स्मरण होगा कि याकूब 1:5 ऐसे कहता है कि:

पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उस को दी जाएगी (याकूब 1:5)।

वे जो पूरे आनन्द को पाना चाहता है जब वे परीक्षाओं का सामना कर रहे होते हैं तो उन्हें परमेश्वर से अन्तर्दृष्टि की मांग करनी चाहिए। उन्हें उस बुद्धि की आवश्यकता है जो उन्हें यह समझ दे कि वे कैसे ये परीक्षाएँ उनका मार्गदर्शन तरक्की के कर रही हैं। और यदि हम इस तरह के ज्ञान को परमेश्वर से मांगे, तो वह हमें इसे दे देगा। जैसा कि याकूब 1:17 में कहता हुआ चला जाता है, कि परमेश्वर उसके लोगों को भले और अच्छे वरदान देता है। याकूब इस खण्ड का अन्त 1:18 में इस पुन: आश्वासान के साथ करता है:

उस ने [परमेश्वर] अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उस की सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार के प्रथम फल हों (याकूब 1:18)।

जब हम इस ज्ञान को प्राप्त करते हैं जो हमें यह समझ देता है कि कैसे परमेश्वर परीक्षाओं के द्वारा कार्य करता है, तो हमें आनन्द से भर जाना चाहिए। बुद्धि हमारे उस भरोसे को सामर्थ्य देती है जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए अनन्तकाल के उद्धार की आशीष के लिए नियुक्त किया है।

ज्ञान और आनन्द के ऊपर अपने विचार विमर्श के पश्चात, याकूब ज्ञान और आज्ञाकारिता के मध्य के सम्बन्ध की ओर बढ़ता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

ज्ञान और आज्ञाकारिता (1:19-2:26)

इस खण्ड में, याकूब ज्ञान और आज्ञाकारिता के ऊपर तीन चरणों में विचार विमर्श करता है। 1:19-27 में वह सुनते या बात करते रहने की अपेक्षा कर्म करने की महत्वपूर्णता को परिचित करते हुए आरम्भ करता है।

कर्म (1:19-27)

1:22 में हम इसे पढ़ते हैं:

परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं (याकूब 1:22)।

वचन को सुनना ही केवल मात्र अच्छा नहीं है। परमेश्वर की ओर से ज्ञान के वचन विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता की ओर मार्गदर्शन देते हैं। अन्यथा, हम स्वयं को धोखा दे रहे हैं।

जब आप याकूब की पत्री को पढ़ते हैं तो आप समझ जाते हैं कि वह वास्तव में इन बातों को व्यवहार के अभ्यास में लाने की आवश्यकता के ऊपर जोर दे रहा है जिन्हें हम कहते हैं कि हम विश्वास करते हैं। यह पूरी पत्री में एक बहुत ही मुख्य विषय रहा है। हमें एक प्रश्न पूछने की आवश्यकता है, क्यों याकूब इसके ऊपर जोर दे रहा है? और ऐसा प्रतीत होता है कि पहला उत्तर यह हो सकता है, कि याकूब एक वास्तविक संसार में जीवन यापन कर रहा है, वह वास्तविक लोगों की सेवा कर रहा है, और जिस संसार में हम जीवन यापन कर रहे हैं जहाँ पर बातचीत बहुत हल्की हो सकती है, जहाँ पर यह कहना बहुत आसान है कि हम परमेश्वर में विश्वास करते हैं और जो उन मान्यताओं के ऊपर चलना अत्यन्त कठिन हो जब उन्हें व्यवहार में लाया जाए। ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक चुनौती के समान था न केवल याकूब के लिए अपितु यीशु के लिए भी...बात करना वैसा ही नहीं होता जैसा कर्म करना होता है। यीशु इसे जानता था। याकूब उसे जानता था। वे वास्तविक संसार में वास्तविक समस्या के साथ वास्तविक लोगों तक पहुँचने की कोशिश कर रहे थे। - डॉ जिम्मी अगॉन

याकूब अपने पाठकों से अपेक्षा करता है कि वे परमेश्वर का वचन सुनने की अपेक्षा कुछ ज्यादा करें। वह उनसे अपेक्षा करता है कि वे अपने विश्वास को कार्य व्यवहार में लाए। यह विषय याकूब के लिए इतना अधिक महत्वपूर्ण था कि, यद्यपि उसने इसे अध्याय 1 और दो में विचार विमर्श किया है, वह इसके ऊपर निरन्तर अपनी सम्पूर्ण पत्री में मुड़ता रहता है। उदाहरण के लिए, 3:13 में, एक बार फिर से याकूब का मूल दृष्टिकोण ज्ञान और आज्ञाकारिता के मध्य के सम्बन्ध की ओर प्रगट होता है। याकूब लिखता है:

तुम में ज्ञानवान और समझदार कौन है? जो ऐसा हो वह अपने कामों को अच्छे चाल-चलन से उस नम्रता सहित प्रगट करे जो ज्ञान से उत्पन्न होती है (याकूब 3:13)।

जैसा कि यह वचन इंगित करता है, ज्ञान और परमेश्वर की समझ परीक्षाओं और दुखों में काम आती है जो कि केवल बौद्धिक विषय से बढ़कर नहीं है। वे जिनके पास यह होती है वे इन्हें अपने अच्छे जीवन के द्वारा, अच्छे कार्यों को...नम्रता में करते हुए दिखाते हैं जो उस ज्ञान से आता है जिसे परमेश्वर देता है।

इस तरह से, याकूब इस खण्ड का अन्त शुद्ध, या निर्मल भक्ति में कार्य व्यवहार में लाने की आवश्यकता के ऊपर निष्कर्ष निकालते हुए करता है:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें (याकूब 1:27)।

यीशु ने भक्ति के विषय में खुल्मखुल्ला बोला – जिसे वह "शुद्ध और निष्कलंक" कह कर पुकारता है – ऐसा होने के कारण: "अनाथों ओर विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।" और हमारी इस संस्कृति में, जो कि बहुत ज्यादा कई तरीकों से भौतिकवादी है, ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, यह कि एक तरीका जिसमें हम हमारे चारों के गरीबों की देखभाल न करने के कारण प्रदूषित हो सकते हैं, या उनकी गरीबी को किसी अन्य बात के साथ मिला सकते हैं और इनके विधिवत् तरीके से निकलने वाले परिणामों को न देखते हुए, या स्वयं के ऊपर देखते हुए, जिनके पास साधन हैं, ऐसा अर्थ निकालते हुए, कि इसका अर्थ यह है कि हम किसी तरह से सर्वोत्तम हैं, या हमारे पास परमेश्वर की आशीषें हैं और गरीब लोगों के पास नहीं हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि अकसर कई बार जो कुछ आप पाते हैं वह यह कि एक गरीब व्यक्ति का विश्वास ऐसे लोगों से ज्यादा शक्तिशाली और ज्यादा प्रमाणिक होता है जिन्होंने उसी ही बात को जो उनके पास थी, से दुख नहीं उठाया है। - रेव्ह. डॉ. थिरूमान विलियम्स

कर्म की इस परिचयात्मक बुलाहट का अनुसरण करते हुए, याकूब ने ज्ञान और आज्ञाकारिता के मध्य के सम्बन्ध के ऊपर 2:1-13 में दी हुए पक्षपात की समस्या के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हुए विस्तृत व्याख्या दी है।

पक्षपात (2:1-13)

याकूब के पाठकों में कुछ लोग ऐसा प्रतीत होता है कि धनवानों को प्राथमिकता और गरीबों को अन्देखा कर रहे थे। और इस खण्ड में, याकूब इस समस्या का समाधान उन्हें उस बात की ओर उचित ध्यान देने की बुलाहट देकर कहता है जिसे वह "राजकीय व्यवस्था" कह कर पुकारता है।

2:8 में याकूब कहता है कि:

तौभी यदि तुम पवित्र शास्त्र के इस वचन के अनुसार कि, "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख," सचमुच उस राज व्यवस्था को पूरी करते हो, तो अच्छा करते हो (याकूब 2:8)।

आवश्यक रूप से, धनवानों के पक्ष में गरीबों को अन्देखा करना "अपने पड़ोसी को प्रेम करने" में असफलता थी। और याकूब कहता है कि उन्हें पक्षपात के पाप से राजकीय व०्यवस्था को पूरा करते हुए बचना चाहिए।

हम याकूब की धनवान और गरीब के साथ उनके सम्बन्ध के ऊपर दी गई शिक्षा में, लूका 16 में उद्धारकर्ता की शिक्षा के वास्तविक प्रतिबिम्ब को देखते हैं। याकूब के अध्याय 2 में, वह यह बात करता है कि कैसे, तुम नहीं जानते कि परमेश्वर ने गरीब को चुना है, वे जो उसको प्रेम करते हैं, कि वे उसके राज्य के उत्तराधिकारी हों...धनवान जब मसीही सभाओं में आते हैं तो उनके साथ पक्षपात दिखाया जाता था। उनके साथ अन्तर दिखाया जाता था - "तुम कुर्सी ले सकते हो; मण्डली की सभा में तुम्हारे लिए सबसे उत्तम कुर्सी रखी गई है।" और याकूब उन लोगों को चेतावनी देता है जो इस तरीके से व्यवहार कर रहे थे, को स्मरण रखना चाहिए कि गरीब का

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

परमेश्वर के राज्य में पूरा उत्तराधिकार होगा, पूरा अधिकार होगा, और इसलिए उन्हें पूर्ण गरिमा और सम्मान और परमेश्वर के लोगों के मध्य में पूर्ण सदस्यता दी जानी चाहिए। -डॉ. ग्रेग पैरी

जैसा कि हमने देखा है, कि याकूब की पुस्तक में परमेश्वर की व्यवस्था को लेकर बहुत ही सक०ारात्मक ध्यानाकर्षण है। याकूब के दृष्टिकोण में, व्यवस्था हमें सिखाती है कि हम एक दूसरे की देखभाल करें, गरीब के लिए तरस हो, पक्षपात से बचें, और इसी तरह की अन्य बातें। परन्तु इस सकारात्मक दृष्टिकोण को गलत उपयोग भी किया जा सकता है यदि हम सावधान नहीं हैं। आधुनिक मसीही विश्वासी अकसर इस बात की ओर संकेत देते हैं कि कैसे परमेश्वर की व्यवस्था का उपयोग परमेश्वर के सामने स्वयं के धार्मिक कामों के द्वारा स्वयं को धर्मी ठहराने और कोशिश करने के तरीके के लिए व्यर्थ किया गया है। और हमारे पास परमेश्वर की व्यवस्था के इस दुरूपयोग को अस्वीकार करने का अधिकार है। परन्तु, इसके विपरीत, याकूब की पुस्तक व्यवस्था के एक भिन्न पहलू के ऊपर जोर देती है। याकूब ने शिक्षा दी है कि यद्यपि कोई भी व्यवस्था के द्वारा धर्मी नहीं ठहराया जा सकता है, परमेश्वर की व्यवस्था हमारे लिए ज्ञान का स्रोत है। और हमें इसकी आज्ञाकारिता में रहना चाहिए। इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि हम व्यवस्था की आज्ञापालन नहीं करते हैं मानो कि हम अभी भी पुराने नियम में समय व्यतीत कर रहे हो०; परन्तु फिर भी हमें परमेश्वर की व्यवस्था को मसीह और नए नियम की शिक्षाओं के प्रकाश में लागू करना चाहिए। परन्तु वे जिन्होंने मसीह पर उद्धार के लिए भरोसा किया है व्यवस्था को परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता दिखाने के लिए पालन करने हैं, क्योंकि यह परमेश्वर के ज्ञान का प्रकाशन है। इस अर्थ में, याकूब भजन संहिता 19:7-8 की प्रतिध्वनित करता है जहाँ हम इस तरह से पढ़ते हैं कि:

यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं (भजन संहिता 19;7-8)।

ज्ञान के वचन और पक्षपात का विरोध के प्रति कर्म की महत्वपूर्णता को परमेश्वर की राजकीय व्यवस्था का पालन करने के द्वारा परिचित कराने के पश्चात्, याकूब 2:14-26 में विश्वास और आज्ञाकारिता के मध्य के सम्बन्ध को सम्बोधित करता है।

विश्वास (2:14-26)

2:14 में, याकूब इस प्रश्न को उठाता है:

हे मेरे भाइयों, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो उस से क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है (2:14)।

याकूब इसका उत्तर गूँजती हुई आवाज "नहीं" के रूप में देता है। वह ऐसा कई तरीकों से करता है। सर्वप्रथम, वह यह इंगित करता है कि शैतान भी परमेश्वर के बारे में सच्ची बातों पर विश्वास करता है, परन्तु इससे उसका कुछ भी लाभ नहीं होता। फिर यह ध्यान देता है कि कैसे अब्राहम के विश्वास ने उसका मार्गदर्शन आज्ञाकारिता के लिए किया। और वह यह विवरण देता है कि राहाब ने अपने विश्वास को भले कर्मों के द्वारा प्रदर्शित किया। इसलिए, 2:26 में, याकूब इस जाने-पहचाने निष्कर्ष को निकालता है:

अत:, जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है (याकूब 2:26)।

याकूब के अनुसार, सही मान्यताओं का होना ही पर्याप्त नहीं है। एक विश्वास जो स्वयं में आज्ञाकारिता को प्रगट नहीं करता है वह मरा हुआ है। यह एक बचाने वाला सच्चा विश्वास नहीं है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अपने पाठकों को आज्ञाकारिता के जीवन को यापन करने के लिए उत्साह भरे उपदेश देने के पश्चात्, याकूब अपने ध्यान को मसीह के अनुयायियों के मध्य ज्ञान और शान्ति के मध्य के सम्बन्ध के ऊपर केन्द्रित करता है।

ज्ञान और शान्ति (3:1-4:12)

4:1 में याकूब के प्रश्न को सुनिए:

तुम में लड़ाइयाँ और झगड़े कहाँ से आ गए? क्या उन सुख- विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते- भिड़ते हैं (याकूब 4:1)।

यद्यपि यह वचन इस खण्ड के मध्य में आती है, परन्तु कई तरीकों से सम्पूर्ण खण्ड इसी ही प्रश्न का निपटारा करता है।

इस खण्ड में, याकूब विश्वासियों के मध्य ज्ञान और शान्ति से सबंद्ध तीन मुख्य विषयों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करता है। सर्वप्रथम 3:1-12 में, याकूब अपने ध्यान को जीभ, या शब्दों के हमारे उपयोग के ऊपर केन्द्रित करता है।

जीभ (3:1-12)

3:4 और 5 में, याकूब जीभ की तुलना जहाज के पतवार के साथ करता है। वह इसे इस तरीके से व्याख्या करता है:

[जहाज] यद्यपि ऐसे बड़े होते हैं, और प्रचण्ड वायु से चलाए जाते हैं, [तौभी] एक छोटी सी पतवार के द्वारा मांझी की इच्छा के अनुसार घुमाए जाते हैं... वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा अंग है और बड़ी-बड़ी डींगे मारती है (याकूब 3:4-5)।

तब वचन 6 में, वह आगे बढ़ता हुआ, अपने पाठकों को कहता है कि:

जीभ... [है] भी हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है। और सारी देह पर कलंक लगाती है, और जीवन-गति में आग लगा देती है, और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है (याकूब 3:6)।

याकूब की जीभ की बुराई करने की क्षमता के विरोध में दी गई चेतावनी बहुत कुछ इसी समान है जिसे हमें नीतिवचन की पुस्तक में पाते हैं। नीतिवचन जीभ, या भाषण के साथ सम्बन्धित खतरों के बारे में भी बहुत बार निपटारा करता है। हम इसके विषय में नीतिवचन 10:31; 11:12; 15:4; जैसे स्थानों और अन्य वचनों में पाते हैं। दोनों याकूब और नीतिवचन यह संकेत देते हैं कि शब्द परमेश्वर के लोगों के मध्य में कई तरह की परेशानियों की ओर ले जा सकते हैं। संघर्ष से बचने और शान्ति में जीवन व्यतीत करने के लिए, हमें अपने जीभों के ऊपर नियंत्रण करना चाहिए।

जब हम याकूब की पुस्तक के पास आते हैं और हम उससे हमारी बोलचाल के बारे में बोलते हुए सुनते हैं, तो हमें कदाचित् यीशु के शब्दों स्मरण हो आते हैं, जब वह यह कहता है कि "जो कुछ मन में होता है वह मुँह से बाहर निकल आता है।" और जब याकूब यीशु के इन शब्दों के ऊपर चिन्तन करता है और कलीसिया को निर्देश प्रदान करता है – कि कैसे हमें मसीह के आगमन के प्रकाश में जीवन व्यतीत करना चाहिए और उसके भविष्य के आगमन की प्रतीक्षा करनी चाहिए – तो याकूब हमारे मनों को नापने के लिए एक तरीका हमारे शब्दों के ऊपर ध्यान देने के ऊपर देकर करता है। दूसरे शब्दों में, याकूब एक व्यक्ति के शब्दों को, जीभ को, जो कि शब्दों के लिए आशुलिपि है, मानो कि एक व्यक्ति के सम्पूर्ण नैतिक प्राणी के लिए पैमाना है। यह एक तापमान

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

को देती है – दूसरी तरह से कहना – यह एक व्यक्ति के मन का तापमान देती है। और इसलिए, ठीक जैसे यीशु कहता है, "जो कुछ मन में होता है वह मुँह से बाहर निकल आता है," जब याकूब कहता है कि एक व्यक्ति को अपनी जीभ के ऊपल लगाम लगानी चाहिए और ऐसा नहीं होना चाहिए कि एक ही मुँह से आशीष ओर श्राप दोनों निकल कर आए, तो वह हमें कह रहा है कि हमारे मन को परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से समर्पित होना चाहिए। हमें दुचित्ते व्यक्ति नहीं होना चाहिए, अपितु हमें, विश्वास में, मसीह की शिक्षा को थामे रखना चाहिए, और जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारे शब्द हमारे भाईयों और बहिनों को श्रापित करने की अपेक्षा आशीषित करना चाहिए। - डॉ. ब्रॉडमैन डी. क्रौवी

ज्ञान और शान्ति के साथ दूसरा बँधा हुआ विषय, दो प्रकार के ज्ञान के साथ सम्मिलित है। हम 3:13-18 में पाते हैं।

दो प्रकार की ज्ञान (3:13-18)

याकूब 3:14-17 में हम निम्न शब्दों को पढ़ते हैं:

पर यदि तुम अपने अपने मन में कड़वी डाह और विरोध रखते हो... तो यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर से उतरता है, वरन् सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी है.... पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहिले तो पवित्र होता है; फिर मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है (याकूब 3:14-17)।

जैसा कि हम यहाँ पर देखते हैं, कि ज्ञान और शान्ति में सम्बन्ध की व्याख्या करने के लिए, याकूब स्वर्ग से उतरने वाले ज्ञान और सांसारिक, और शारीरिक, और शैतानी के मध्य में भिन्नता करता है। सांसारिक ज्ञान कड़वी डाह, स्वार्थ महत्वकांक्षा की ओर मार्गदर्शन करता है। परन्तु परमेश्वर की ओर से आने वाला ज्ञान मसीह समाज के लिए शान्ति लेकर आता है।

याकूब अपने पाठकों को अपनी लड़ाई और झगड़े के एक तरफ कर देने के लिए बुलाहट देता है। वह व्याख्या करता है कि जब हम स्वार्थी इच्छाओं के साथ चिपक जाते हैं तो हमारे मध्य में किसी भी तरह की शान्ति नहीं हो सकती है। सांसारिक ज्ञान, वह शिक्षा देता है कि "बखेड़े और हर तरह के दुष्कर्म" की ओर ले चलता है। इस तरह से, याकूब अपने पाठकों को निर्देश देता है कि वे परमेश्वर की ओर से आने वाले ज्ञान के ऊपर निर्भर रहें। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम शान्ति को पाते हैं। जैसा याकूब 3:18 में लिखता है:

मिलाप कराने वाले धार्मिकता का फल मेल- मिलाप के साथ बोते हैं (याकूब 3:18)।

4:1-12 में, इस खण्ड में तीसरा विषय, ज्ञान और शान्ति में सम्बन्ध के ऊपर आन्तरिक संघर्ष की ओर देखता है जिसे मसीह के अनुयायी अनुभव करते हैं।

आन्तरिक संघर्ष (4:1-12)

याकूब विश्वासियों के मध्य में स्वार्थी झगड़ों, गलत उद्देश्यों और असंतोष के कारण झगड़ों का पता लगाता है। याकूब के दृष्टिकोण से, उसके पाठकों में बुरी इच्छाओं ने मसीही समाज को बहुत ज्यादा क्षति पहुँचाई थी। वे अपने चाहतों के अधीन थे। और इस कारण से, वे लड़ रहे थे, और लालच कर रहे थे और यहाँ तक वे एक दूसरे को नुकसान पहुँचा रहे थे। इसलिए याकूब बड़ी कठोरता के साथ उनसे कहता है कि उन्हें शान्ति लाने के लिए क्या करना चाहिए। 4:7-10 में, याकूब कहता है कि:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ... परमेश्वर के निकट आओ... प्रभु के साम्हने दीन बनो, तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा (4:7-10)।

परमेश्वर के सामने केवल नम्रता से अधीन होना ही उनके झगड़ों को समाप्त कर सकता था और उन्हें एक दूसरे के साथ शान्ति दे सकता था।

अब, आइए ज्ञान और भविष्य के मध्य में सम्बन्ध के ऊपर ध्यान दीजिए।

ज्ञान और भविष्य (4:13-5:12)

ज्ञान और भविष्य के ऊपर याकूब के विचार विमर्श को तीन हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है। पहला हिस्सा 4:13-17 में पाया जाता है और उन लोगों के साथ निष्पादन करता है जो कि भविष्य के लिए योजनाओं को निर्मित कर रहे हैं मानो परमेश्वर के नियंत्रण में कुछ नहीं है।

योजनाओं को निर्मित करना (4:13-17)

ये वचन संकेत देते हैं कि याकूब के पाठकों में से बहुत से अपने स्वयं के भविष्य को निर्धारित करने के प्रयास में लगे हुए थे। उन्होंने अपने ध्यान को धन इकट्ठा करने के ऊपर केन्द्रित कर दिया था, और वे डींग मारते थे कि वे क्या करेंगे और वे कहाँ जाएँगे। इसके प्रति प्रतिक्रिया स्वरूप, याकूब ने उन्हें स्मरण दिलाया कि उनके जीवन क्षणभुंगर थे। वे संभवत: नहीं जानते थे कि उनके भविष्य में क्या कुछ है। सुनिए 4:15 और 16 को जहाँ याकूब ने उन्हें ऐसे कहा?:

इस के विपरीत तुम्हें यह कहना चाहिए, "यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेंगे, और यह या वह काम भी करेंगे।" पर अब तुम अपनी डींग पर घमण्ड करते हो; ऐसा सब घमण्ड बुरा होता है (याकूब 4:15-16)।

भविष्य केवल परमेश्वर के नियंत्रण में है और वे जो बुद्धिमान हैं इसे स्वीकार करते हैं।

इस भाग के दूसरे हिस्से में, याकूब ने ज्ञान और भविष्य के ऊपर अपने ध्यान को थोड़ा से भिन्न तरीके से केन्द्रित किया है। 5:1-6 में, वह भविष्य के न्याय के दिन के कारण धन के अपसंचय के विषय में उन्हें चेतावनी देता है।

धन का अपसंचय (5:1-6)

याकूब ने बहुत बड़ी मात्रा में कई स्थानों पर गरीबों से व्यवहार करने के विषय में लिखा है। और उसने लगातार उन लोगों के धन की निन्दा की है जो कम भाग्यशाली लोगों से लाभ उठाते हैं। इन वचनों में, याकूब कठोरता से धनवानों को चेतावनी देता है कि जिन्होंने गरीबों के दम पर धन को इकट्ठा किया था। और उन्हें सूचित करता है कि वे शीघ्र ही दुख का सामना करेंगे। जैसा वह 5:3 में लिखता है:

तुम्हारे सोने- चाँदी में काई लग गई है; और वह काई तुम पर गवाही देगी, और आग के समान तुम्हारा मांस खा जाएगी। तुम ने अन्तिम युग में धन बटोरा है (याकूब 5:3)।

जैसा कि यह प्रसंग संकेत देता है, कि दूसरे के दम पर धन को एकत्र करना गंभीर न्याय को लेकर आएगा।

मूल रूप से जो कुछ याकूब कह रहा है वह कुछ इस तरह से है जो बहुत से यहूदियों जिन्होंने उसे सुना होगा उनके दिमाग-को-हिला देने वाला रहा होगा। वह मूल रूप से उस समझ को उलट देता है कि इस्राएल में बहुत से धनी और गरीबों में सम्बन्ध था, और वह वास्तव में गरीबों को आशीष देने के लिए बुलाहट देता है और उनके बारे में बोलता है... वह वास्तव में धनी को पश्चाताप और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

न्याय की अपेक्षा करने के लिए तैयार रहने के लिए कहता है...उस न्याय का आधार ये लोग होंगे जो धन का अपसंचय कर रहे हैं, जो कि मूल रूप से, यदि आप धन से आशीषित हुए हैं, तो परमेश्वर की इच्छा यह है कि आप इसे अपने पड़ोसी के साथ सांझा करें, परन्तु वे इसका अपसंचय स्वयं के लिए कर रहे थे। वे अपने कार्यकर्ताओं को उचित मजदूरी न देकर उन्हें धोखा दे रहे थे...धन परमेश्वर का उपहार है इसलिए तब इसे जैसा परमेश्वर चाहता है वैसे ही उपयोग किया जाना चाहिए, न कि स्वयं के लिए, अपितु अन्त में अपने पड़ोसी के लिए। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक व्यापार "अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम रख," के सिद्धान्त के अनुसार चलता है। -रेव्ह. डेविड आई. ऐम. लुईस

ज्ञान और भविष्य के ऊपर याकूब के विचार विमर्श का तीसरा हिस्सा, 5:7-12 में पाया जाता है, जो कि परमेश्वर की भविष्य की योजना को खोलने के लिए धैर्यपूर्ण प्रतीक्षा करने की ओर मोड़ देती है।

धैर्य सहित प्रतीक्षा करना (5:7-12)

याकूब उन लोगों की आलोचना करता है जिन्होंने अपने लिए योजनाएँ परमेश्वर के ज्ञान के ऊपर निर्भर न रहते हुए बनाई थी। और उसने उन्हें चेतावनी दी थी कि वे जो परमेश्वर के ज्ञान को धन का अपसंचय और गरीबों का दुर०ूपयोग करते हुए अन्देखा करेंगे वे परमेश्वर के न्याय को देखेंगे। परन्तु इसके पश्चात्, याकूब उन लोगों को उत्साहित करता है जो धैर्य के साथ इतिहास की समाप्ति के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा करते हैं। सुनिए 5:7 और 8 को जहाँ याकूब इस रूपक का उपयोग करता है:

इसलिए हे भाइयों, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो। देखो, किसान पृथ्वी की बहुमूल्य फसल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है। तुम भी धीरज धरो; और अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है (याकूब 5:7-8)।

जैसा कि हमने अभी अभी संकेत दिया, इस हिस्से में याकूब के शब्द धन को चेतावनी देने से बहुत ज्यादा प्रभाव डालते हैं। वे साथ ही गरीब और सताए हुओं को उत्साहित करते हैं। याकूब का उसके पाठकों के लिए कठोरता से भरा हुआ स्मरण दिलाता है कि न्याय का दिन आने वाला है। और उस समय, वे जो विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर के ऊपर निर्भर रहे हैं, उन्हें पुरस्कार दिया जाएगा। इस तरह से, वह विश्वासयोग्य विश्वासियों को परमेश्वर के ज्ञान के मार्ग पर चलने के लिए, अपने विश्वास के अंगीकार में, भविष्य के लिए परमेश्वर की अन्तिम भव्य योजना के आलोक में जीवन यापन करने के लिए उत्साहित करता है।

अपने पाठकों को यह व्याख्या कर लेने के पश्चात् कि कैसे ज्ञान आनन्द के साथ, आज्ञाकारिता के साथ, और भविष्य के साथ सम्बन्धित है, याकूब की पुस्तक का समापन ज्ञान और प्रार्थना के एक संक्षिप्त व्यवहारिक उपयोग के साथ होता है।

ज्ञान और प्रार्थना (5:13-18)

याकूब के पाठक कई तरह के विषयों का निष्पादन कर रहे थे। वे अपने घरों से बिखरे हुए थे। धनी गरीबों का दमन कर रहे थे। वे एक दूसरे के साथ बहस कर रहे और ठेस पहुँचा रहे थे। ऐसा प्रतीत होता है, कि उनमें से कई अपनी स्वार्थी इच्छाओं के अधीन थे। और जीवन यापन करने के ऐसे तरीकों को प्राप्त करने में कठिनाई का सामना कर रहे थे जो उनके विश्वास के अंगीकार के साथ मिलता हो। इसलिए, इस अन्तिम भाग में, याकूब ने उन्हें सीखाया कि मसीह०ी समाज में क्या किया जाना चाहिए जब वे इन

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

संघर्षों का सामना करते हैं। अपनी पत्री के आरम्भ में जैसे उनसे शिक्षा दी है उसी के समान, यहाँ याकूब उन्हें निर्देश देता है कि वे स्वयं को प्रार्थना करने में समर्पित करें। परेशानी या आनन्द के समय में, जब वे बठीमारी से संघर्षरत् हों, यहाँ तक कि बठीमारी किसी एक व्यक्तिगत् पाप के कारण आई होठं, तो वे जिनके पास ज्ञान हो प्रार्थना करें। सुनिए 5:13 और 14 को जहाँ पर याकूब उसके पाठकों को ऐसे कहता है:

> **यदि तुम में कोई दु:खी है, तो वह प्रार्थना करे। यदि आनन्दित है, तो वह स्तुति के भजन गाए। यदि तुम में कोई रोगी है, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उसके लिये प्रार्थना करें (याकूब 5:13-14)।**

स्पष्ट है कि, याकूब अपने पाठकों से अपेक्षा करता है कि वे प्रत्येक परिस्थिति में परमेश्वर के निकट ज्ञान को पाने के लिए आ जाए। इसका कारण पर्याप्त रूप से वचन 16 में स्पष्ट है चहाँ पर याकूब ने ऐसे कहा:

> **धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है (याकूब 5:16)।**

धैर्य और परीक्षाओं में बुलाहट देने के साथ अपनी पत्री के मुख्य हिस्से को समाप्त कर लेने के पश्चात्, याकूब अपने पत्र को उत्साह के उपदेश के साथ समाप्त करता है।

अन्तिम उपदेश (5:19-20)

5:19 और 20 में, याकूब अपने पाठकों से आग्रह करता है कि एक दूसरे की देखभाल किया करो और उन्हें वापस विश्वास में ले आए जो सत्य से भटक गए हैं। वह उन्हें स्मरण दिलाता है, कि विश्वास के समाज में भाई और बहिन होने के नाते, यह उनका दायित्व और सौभाग्य है कि लोगों को विश्वास में पुन: लौटा ले आने के लिए मार्गदर्शन दिया जाए ताकि वे सच में बचा लिए जाएँ।

सारांश

याकूब की पत्री के परिचय में, हमने इस पुस्तक की पृष्ठभूमि को देखा और लेखक, पाठक और लिखने के अवसर के ऊपर ध्यान दिया। हमने इस पत्री की सरंचना और विषयवस्तु का पता लगाया और यह देखा कि कैसे यह पुस्तक नए नियम में परीक्षा के द्वारा हताशा का सामना करते हुए विश्वासियों के लिए आनन्द, आज्ञाकारिता, शान्ति और भविष्य और प्रार्थना के लिए बुद्धि साहित्य की एक पुस्तक के रूप में कार्य करती है।

याकूब की पत्री की पुस्तक ने पहली सदी के विश्वासियों को परमेश्वर के ज्ञान को पाने के लिए चुनौती दी ताकि जब वे परीक्षाओं को सहन करते हैं तो उन्हें आनन्द प्राप्त हो सके। इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि आप और मैं याकूब के मूल पाठकों से भिन्न परिस्थितियों में जीवन यापन करते हैं। परन्तु हम भी परीक्षाओं का सामना करते हैं, हमें भी परमेश्वर की ओर से ज्ञान की आवश्यकता है जिससे हम इन परीक्षाओं को निष्पादन कर सकें। याकूब के पहले पाठकों की तरह ही, हमें पूरे आनन्द की आवश्यकता है जिसे परमेश्वर का ज्ञान लेकर आता है। यद्यपि, इस अध्याय में, हमने केवल उन बातों को स्पर्श किया है जिनका प्रस्ताव यह पुस्तक देती है, एक बात स्पष्ट हो जानी चाहिए: याकूब की पत्री प्रत्येक युग के लिए एक बुद्धिमानी से भरे हुए जीवन को यापन करने के लिए मार्ग को प्रशस्त करती है। और जितना अधिक हम इस पुस्तक को हमारे जीवनों में लागू करते हैं, उतना अधिक हम पूरे आनन्द की आशीषों को प्राप्त करते हैं जिसे परमेश्वर उसके लोगों को देने का प्रस्ताव देता है, चाहे किसी भी तरह की परीक्षा या परेशानी को हम क्यों न सामना करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम